BA(Hons.) PART –I , Paper- II

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

गॉधीजी के आर्थिक विचार

गॉधीजी एक महान् आध्यात्मिक पुरूष थे और राजनीति के समान ही अर्थव्यवस्था के संबंध में गॉधीजी का विचार था कि सच्चा अर्थशास्त्र नैतिकता के महान् नियमों के प्रतिकूल हो ही नहीं सकता है, क्योंकि सच्चा अर्थशास्त्र सामाजिक न्याय चाहता है। सामाजिक न्याय दुर्बल से दुर्बल व्यक्ति का भी सामाजिक हित चाहता है और अच्छे जीवन के लिए यह आवश्यक भी है। गॉधीजी के आर्थिक विचारधारा के प्रमुख विन्दु निम्न प्रकार है :–

1. **औधोगीकरण का विरोध** – गॉधीजी के विचारधारा के अनुसार बड़े उधोग भारतीय अर्थव्यवस्था, सामाजिक अर्थव्यवस्था के अनुकूल नहीं हैं। बड़े उधोग बड़े बाजारों की तालाश में उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद का बढ़ावा देते हैं। जिसके कारण गॉधीजी बड़े उधोगों को मानव जीवन के लिए अभिशाप मानते हैं। गॉधीजी के अनुसार औधोगीकरण से बेरोजगारी व केन्द्रीकरण की प्रवृति बढ़ती है। इससे व्यक्ति की स्वतंत्रता नष्ट हो जाती है। गॉधीजी बड़े उधोगों का विरोध कर छोटे उधोगों का समर्थन करते हैं। गॉधीजी के अनुसार, कुटीर उधोगों से ही विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था तथा विकेन्द्रीकृत समाज की रचना करना संभव है। उनका यह भी मानना था कि औधोगीकरण से धन थोड़े से व्यक्तियों के हाथ में केन्द्रित हो जाता है और बहुसंख्यक वर्ग में निर्धनता आ जाती है। इस प्रकार औधोगीकरण से शोषण को प्रोत्साहन मिलता है। वे मानव के श्रम को प्रधानता देते थे।
2. **अपरिग्रह का सिद्वांत** – गॉधीजी का मानना था कि आर्थिक अन्याय और असमानता को दूर करने के लिए अपरग्रिह का सिद्वांत अपनाना चाहिएं। गॉधीजी के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह नहीं करना चाहिए। गॉधीजी

मानवीय इच्छाओं की अत्यधिक वृद्वि से भी चितिंत थे। वे सादगी और सन्तोषपूर्ण जीवन को ही अपना आर्दश समझते थे।

3. **कुटीर उधोग–धन्धों का समर्थन** – गॉधीजी के द्वारा औधोगीकरण का विरोध करते हुए भी कुटीर उधोग–धन्धों पर आधारित विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था का प्रतिपादन किया, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक गॉव, एक आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करेगा। गॉधीजी ने आर्थिक क्षेत्र में स्वदेशी के विचार का प्रतिपादन किया। वे खादी उधोग को राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं का हल मानते थे। गॉधीजी का विचार था कि प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था वहॉ की भूमि, जलवायु एवं वहॉ निवास करने वाले व्यक्तियों के स्वभाव के आधार पर निश्चित किया जाना चाहिए। उनका मानना था कि कुटीर उधोग धन्धों से ही आर्थिक समस्या का समाधान संभव है। इसलिए उन्होंने इस व्यवस्था को सर्वोत्तम माना ।
4. **रोटी के लिए श्रम की अनिवार्यता** – गॉधीजी के अनुसार, हर व्यक्ति को अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए श्रम करना चाहिए। इसी कारण गॉधीजी रोटी के लिए श्रम के सिद्वांत का समर्थन करते हैं।
5. **ट्रस्टीशिप का सिद्वांत** – गॉधीजी आर्थिक विषमता को मानव जाति के लिए घातक मानते थे। गॉधीजी अपने अहिंसात्मक समाज में आर्थिक समानता के पक्षधर थे, परन्तु गॉधीजी आर्थिक समानता मार्क्स की भॉति नहीं करना चाहते थे। गॉधीजी का विचार था कि हिंसात्मक होने के कारण साम्यवादी पद्वति उपयोगी नहीं हो सकती और पूॅजीपति वर्ग को पूर्णतः नष्ट कर देने से समाज उनकी सेवाओं से वंचित रह जायेगा। इस संबंध में गॉधीजी का विचार था कि सत्य और अहिंसा के आधार पर सार्वजनिक हित के लिए व्यक्गित सम्पत्ति ली जा सके तो ऐसा अवश्य किया जाना चाहिए। गॉधीजी ने आर्थिक समानता के लिए ट्रस्टीशिप का सिद्वांत प्रस्तुत किया। गॉधीजी के ट्रस्टीशिप का सिद्वांत सहयोग एवं सम्पत्ति समाज की धरोहर है, पर आधारित था।
6. **वर्ग सहयोग की धारणा** – गॉधीजी वर्ग संघर्ष की धारणा में विश्वास नहीं करते थे। आर्थिक क्षेत्र में गॉधीजी का विचार वर्ग सहयोग की धारणा पर आधारित है। गॉधीजी का मानना था कि श्रमिक और पूॅजीपति के हित एक ही होते हैं। उनका मानना था कि उधोगों का विकास सामूहिक प्रयत्नों एवं प्रयासों से किया जाना चाहिए। गॉधीजी के

अनुसार, धनवान व्यक्ति और गरीब व्यक्ति सहयोग पर आधारित आर्थिक समानता वाले समाज की रचना करेंगे। गॉधीजी के अनुसार, हर व्यक्ति ही सम्पत्ति समाज की सम्पत्ति है अर्थात् धनी व्यक्ति के पास जो सम्पत्ति है वह समाज की देन है। गॉधीजी का विचार था कि पूॅजीपति वर्ग को समाप्त करने के बजाय उसकी शक्तियों को सीमित करना अधिक उपयोगी होगा और यह कार्य श्रमिकों को उधोगों के प्रबन्ध तथा व्यवस्था में भागीदार बनाकर ही किया जा सकता है। सम्पत्ति का उपयोग अपने लाभ के लिए नहीं, बल्कि समाज के कल्याण के लिए करना चाहिए। गॉधीजी का यह भी मानना था कि मानव जीवन का मूल मंत्र सहयोग है।